SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

FIRST DEGREE PROGRAMME

B.A.

Hindi

Semester : I

Course Code : HN 1132

Cultural History of India

UNIVERSITY OF KERALA
Senate House Campus
Palayam, Thiruvananthapuram

School of Distance Education
University of Kerala,
Kariavattom, Thiruvananthapuram

B.A. Hindi

Semester - I

Course Code: HN 1132

Cultural History of India

DIRECTOR
School of Distance Education
University of Kerala, Kariavattom
Thiruvananthapuram - 695 581

Prepared & Edited by:

Dr. Rajan T. K.
Assistant Professor,
SDE, University of Kerala.

REGISTRAR
IN-CHARGE

UNIVERSITY OF KERALA

© Director, SDE

No. of Copies 100
Printed at : University Press
Thiruvananthapuram
Kup 500/2019-20

अध्याय - एक

भारतीय संस्कृति : एक सामान्य परिचय

1.1. संस्कृति : शब्द और अर्थ

संस्कृति का संबन्ध मनुष्य के सामाजिक जीवन से अधिक निकट है|संस्कृति शब्द का संबन्ध संस्कार से है, जिसका अर्थ होता है परिष्कार करना,संशोधन करना आदि। संस्कृत शब्द का अर्थ भी यही है। संस्कार व्यक्ति के भी होते है या जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। भाव वाचक होने के कारण संस्कृति एक समूह वाचक शब्द भी है। आचार, विचार ,रहन-सहन, रीति-रिवाज़ आदि इसके अंतर्गत आते हैं। ये संस्कार व्यक्ति के घरेलू ,जीवन तथा सामाजिक जीवन में परिलक्षित होते है। अन्य लोगों के संपर्क में आने से संस्कृति में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं और कभी-कभी दब भी जाते हैं।

1.2. धर्म और संस्कृति

धर्म एक व्यापक शब्द है। मानव जीवन में इसका प्रभाव है। भारत में स्मृति, पुराण आदि ग्रंथ धर्म का अधार हैं। किंतु संस्कृति में परंपरा का आधार रहता है। धर्म और संस्कृति का कोई विरोध नहीं है। धर्म देश-निरपेक्ष है, किंतु संस्कृति का संबन्ध देश से अधिक है।

1.3. संस्कृति और सभ्यता

संस्कृति के बाह्य पक्ष को ही सभ्यता कहता है। सभ्यता मूल अर्थ में व्यवहार की साधुता का द्योतक है। किंतु अर्थ-विस्तार से यह शब्द रहन-सहन की उच्चता तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने के साधनों की उन्नती पर लागु होता है। पर आज कल इस सभ्यता शब्द के प्रयोग में बहुत स्थूलता आ गई। जिस सभ्यता का आधार संस्कृति में नहीं वह सभ्यता नहीं । संस्कृति की आत्मा के बिना सभ्यता निष्प्राण है।

अध्याय - दो

प्रारंभकालीन संस्कृति

2.1. वैदिक साहित्य

2.1.1. लौकिक और धार्मिक साहित्य :

साहित्य संस्कृति का एक प्रधान अंग है। साहित्य में मानव जाति के मानसिक विचार सुरक्षित रहते हैं। इसके द्वारा उनके विकास क्रम का भी कुछ अनुमान किया जा सकता है। भारतीय साहित्य की परंपरा एक विशाल परंपरा है। इसकी शाखाएँ भी हैं। भारतीय साहित्य के अंतर्गत वैदिक और लौकिक संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य, उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के प्रांतों के साहित्य का विशाल क्षेत्र हमारे सामने आ जाता है। यहाँ संस्कृत साहित्य परंपरा का उल्लेख मात्र ही किया जा सकता है। भारत वर्ष के लौकिक और धार्मिक साहित्य में कोई अंतर नहीं है, फिर भी इनमें से कुछ साहित्य को हम धार्मिक कह सकते हैं तो कुछ लौकिक।

2.1.2. वैदिक और लौकिक साहित्य :

भाषा की दृष्टि से वैदिक और लौकिक साहित्य में भेद है वैदिक संस्कृत बोल-चाल की भाषा के कुछ निकट थी। एक-एक विभक्ति के कई रूप होते थे। लौकिक संस्कृत में व्याकरण का प्रयोग होने के कारण उसमें तरलता का अभाव था।

1. वेद :

यह हमारी संस्कृति के प्राचीनतम साहित्य भण्डार है। हमारे पूर्वजों के तपोमय चिंतन और अंतरदृष्टि इसमें निहित है। विदेशियों ने भी हमारे ऋग्वेद के महत्व को स्वीकार किया है। वेद का अर्थ ज्ञान है। ज्ञान अनादि है। किंतु उसका प्रकाश समय में होता है। वेदों की ऋचाओं के दृष्टा हुए हैं उन्हें ऋषि कहते हैं। उनको यह उनके अंतर्दृष्टि के द्वारा प्राप्त था। मनुष्य

अध्याय - तीन

मुगल कालीन संस्कृति

भारतीय इतिहास में मुगल काल का प्रारंभ एक नये युग का प्रारम्भ था। 1526 ई में पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त कर बाबर ने मुगल राजवंश का नीव डाली। इस राजवंश ने भारत पर लगभग तीन शताब्दियों तक अपना गौरवपूर्ण शासन बनाये रखा। यद्यपि इसके पश्चात् भी प्रतीकात्मक तौर 1857 ई तक मुगल राजवंश सत्ता शीर्ष पर रहा तद्यपि 1707 ई. के बाद का समय मुगल देश के पतन का दौर ही है। एक लम्बे अरसे के बाद गुप्तकाल के पश्चात् भारतीय राजनीति में स्थिरता आया तथा भारतीय समाज एवं संस्कृति के विविध क्षेत्रों में बहुमुखी विकास देखने को मिलता है। इसी वजह से मुगल काल को द्वितीय क्लासिकल युग की संज्ञा भी दी जाती ही। मुगल काल के सांस्कृतिक विकास में भारत के विभिन्न हिस्सों, मतों तथा जातियों ने विविध प्रकार से योगदान दिया और इस अर्थ में सांस्कृतिक तौर पर एक राष्ट्रीय संस्कृति का विकास हुआ।

3.1. मुगल समाज :

मुगलकालीन भारत की जनसंख्या में पहले की ही तरह हिन्दू एवं मुस्लिम ये दो प्रमुख वर्ग थे। सामाजिक स्तर पर इनकी स्थिति इस प्रकार थी मुस्लिम समाज - शासक वर्ग होने के कारण समाज में अल्पसंख्यक होते हुए भी मुसलमान प्रभावशाली स्थिति में थे। तत्कालीन मुस्लिम समाज मोटे तौर पर दो वर्गों में बाँटा था - (1) विदेशी मुसलमान - जो अरब, फारस अथवा अन्य देशों से भारत आये थे। तथा (2) देसी मुसलमान - जो मूल रूप से यहीं के निवासी थे और उनके पूर्वजों ने विभिन्न कारणों से इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। देशी मुसलमानों की स्थिति विदेशी मुसलमानों की तुलना में हीन थी।

अध्याय - चार

अंग्रेज़ी शासन और संस्कृति

मुगल साम्राज्य जब अपने पतन की ओर अग्रसर था उस समय इंग्लैंड से आयी हुई ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन पर अपनी पकड़ बनाना शुरू कर दिया। उन्नीसवीं शती भारतीय समाज का एक ऐसा संधि काल है, जहाँ से भारतीय जीवन और समाज में नये परिवर्तनों की परम्परा प्रारम्भ हो जाती है। भारत में अपने पाँव जमाने के बाद अंग्रेज़ों ने प्रशासन के अनुकूल अनेक पुरानी रीतियों, परंपराओं एवं प्रणालियों में परिवर्तन किये जिनके परिणाम कुछ तो अच्छे रहे जबकि कुछ ने भारतीय जनता में असंतोष उत्पन्न कर दिया।

अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध भारतीय एकजुट होने शुरू हुए। कुछ बुद्धिजीवियों ने इस क्रम में जनागारण एवं आत्मसशक्तीकरण का प्रथम शुरू किया। उन्नीसवीं शताब्दी में हुए आन्दोलनों ने भारतीयों को सामाजिक और धार्मिक चेतना से आंदोलित किया। जिस प्रकार फ्रांस की क्रांति में वहाँ के दार्शनिकों एवं चिंतकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी उसी तरह का योगदान यहाँ के चिंतकों एवं समाज सुधारकों का भारतीय सांस्कृतिक जागरण में दिखाई पड़ता है। कुछ महत्वपूर्ण चिंतकों एवं समाज सुधारकों का योगदान इस प्रकार है।

4.1. राजा राममोहन राय (1774-1866) तथा ब्रह्म समाज

आधुनिक भारतीय सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय का जन्म बंगाल के बर्दवान जिले के राधानगर गाँव में एक कट्टर सनातनधर्मी परिवार में हुआ। उमकी शिक्षा पटना में हुई जहाँ इन्होंने इतिहास, धर्म, दर्शन और अरबी-फारसी भाषाओं का अध्ययन किया। पाटना में इस्लाम

kup 500/2019-20

अध्याय - पाँच

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय संस्कृति

एक लंबे संघर्ष के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को भारत गुलाम की बेड़ियों को तोड़कर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उठ खडा हुआ। लेकिन हमारी यह स्वतन्त्रता खंडित थी। राजनीतिक तौर पर भारत अब भारत एवं पाकिस्तान नामक संप्रभु राष्ट्रों में बॉट चुका था। अंग्रेज़ों की 'बांटो और राज करो' तथा साम्प्रदायिक राजनीति का यह चरम था। आजादी की खुशी एवं उल्लास के साथ-साथ देश भीषण साम्प्रदायिक दंगों एवं जनसंख्या के स्थानान्तरण के दौर से गुजर रहा था। ऐसे विकट समय में भारत के समक्ष प्रमुख चुनौती स्वतंत्र राष्ट्र की निर्मिती के रूप में थी।

प्रधानमंत्री नेहरू आज़ादी के साथ आने वाली तमाम समस्याओं के प्रति और उसके निराकरण केलिए संघर्ष हेतु सचेत थे। नवगठित सरकार के समक्ष दायित्व था- राष्ट्रीय एकता के प्रोत्साहन एवं राष्ट्र के सुदृढीकरण की, राष्ट्र की रचना प्रक्रिया को आगे बढाने का, तीव्र आर्थिक विकास को प्रोत्साहन की, शताब्दियों से चले आ रहे सामाजिक अन्यायों, असमानताओं और शोषण के उन्मूलन की और एक ऐसे विदेश नीति के विकास की जो विश्व मंच भारत को उसका प्रतिष्ठित स्थान दिला सके।

संयोगवश नवस्वतंत्र भारत के पास उच्च आदर्श एवं प्रतिबद्धता वाले महान नेताओं की एक लम्बी कतार थी। जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभाई पटेल, अब्दुल कलाम आज़ाद, राजेन्द्र प्रसाद, सी.राजगोपालाचारी, गोविन्द वल्लभ पन्त, बी.सी.राय, बी.जी.खेर, आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, पी.सी. जोशी, अजय घोष, भीमराव अम्बेडकर, डॉ.सर्वेपल्ली राधाकृष्णन, जाकिर हुसैन प्रभृति दृढ इच्छा शक्ति वाले, अद्भुत प्रतिभा संपन्न

PROGRAMMES OFFERED BY SDE

- B.A. Economics
- B.A. English
- B.A. History
- B.A. Malayalam
- B.A. Political Science
- B.A. Sociology
- B.Sc. (Computer Science)
- B.Sc. Mathematics
- Bachelor of Computer Application (BCA)
- B.Com
- BLISc.
- M.A. Economics
- M.A. English
- M.A. Hindi
- M.A. History
- M.A. Malayalam
- M.A. Political Science
- M.A. Public Administration
- M.A. Sociology
- M. Sc. Computer Science
- M. Sc. Mathematics
- M.Com-Finance
- MLISc.

Printed by the superintendent of University Press
at the Kerala University Press, Thiruvananthapuram - 34